उगतीयं (उक्तीय / औक्तिक)

शब्द संस्कार:

सं. मुनिकल्याणकीर्तिविजय

भूमिका★

आ ग्रन्थमां ग्रन्थकारना काळमां प्रचलित देशीभाषाना, देश्य-स्वरूपवाळा शब्दोनां संस्कृत-प्रतिरूपोनुं संकलन करवामां आव्युं छे. समग्र भारतवर्षमां साहित्य माटेनी सार्वदेशिकी तथा सार्वकालिकी भाषा प्रधानपणे संस्कृत ज गणाय छे. भारतीय वाङ्मयनो आदि युगथी आज सुधीनो इतिहास तपासीए तो जणाय के तेमां संस्कृतभाषानी ज मुख्यता अने प्रतिष्ठा सर्वदा स्थिर रही छे. जो के, वच्चे वच्चे संस्कृतभाषाना निरन्तर प्रवाहनी साथे साथे ज, तेमांथी ज उत्पन्न थयेल अने तेना ज सहकारथी उज्जीवित एवी घणी प्राकृत भाषाओ प्रादुर्भाव पामी. जेमके - मागधी, शौरसेनी, पैशाची, महाराष्ट्री व. कालान्तरे आ प्राकृत भाषाओमांथी ज रूपान्तर पामी ते ते देशनी अपभ्रंश भाषाओ जन्मी, के जेने वैयाकरणोए **देश्य-भाषा** तरीके ओळखावी.

वर्तमान भारतना समग्र उत्तरापथनी जे जे प्रादेशिक भाषाओ आजे छे - हिन्दी, बंगाळी, मराठी, पंजाबी, सिन्धी, राजस्थानी (-गुजराती, मारवाडी, मालवी) - ते बधी आ अपभ्रंश अथवा देश्य-भाषामांथी ज विकास पामी आजे बोलाता नूतन स्वरूपने पामी छे. आ भाषाओमां मूळ तो सेंकडो संस्कृत शब्दो ज भिन्न भिन्न देश अने जातिना लोकोना परस्पर संपर्कने कारणे तथा उच्चारणभेद अने व्यवहारभेदना कारणे जुदा स्वरूपवाळा थई गया छे. तेमां पण विशेषे तो जे शब्दोमां संयुक्ताक्षरो वधारे होय तेवा शब्दोमां प्राकृत-अपभ्रष्ट फेरफारो अधिकपणे जोवा मळे छे. जेमके - **संस्कृत**नुं - संखय, सक्कय, संगड व.; **प्राकृत**नुं पागय, पाइय, पायड व०; **सदृश**नुं - सरिक्ख-सरिखुं-सरखुं व.; **उपाध्याय**नुं - उवज्झाय-ओज्झाय-ओझा-झा/वझे व.

★ पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजय सम्पादित - **राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला**मां प्रकाशित-**साधुसुन्दरगणि**विरचित '**उक्तिरत्नाकर**'नी प्रस्तावनामांथी संकलित ।

संस्कृत शब्दोना प्राकृत-अपभ्रष्ट रूपो बनाववानी / बनवानी प्रक्रिया प्राकृत-अपभ्रंश व्याकरणोमां सविस्तर वर्णववामां आवी छे. संस्कृत-प्राकृतभाषा-साहित्यना विशिष्ट अभ्यासीओ तो आ व्याकरणोनो अभ्यास करीने उक्त प्रक्रियाने जाणी-समजी शके छे. परन्तु, जे लोकोने सामान्यथी ज **देश्यभाषा** अने **संस्कृतभाषा**नुं साम्य/वैषम्य जाणवुं होय, तथा जे देश्यशब्द लोकबोलीना कारणे मूळ संस्कृतरूप करता जुदो थई गयो होय तेनुं संस्कृत प्रतिरूप शुं होई शके ते जाणवुं होय, तेमने संक्षेपमां ज बोध करावववा माटे पूर्वकालीन विद्वानोए आ औक्तिकसंज्ञावाळा ग्रन्थोनी रचना करी छे.

आ ग्रन्थोमां अद्यावधि उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ छे **बनारसना दामोदर पंडित** विरचित **उक्ति-व्यक्तिप्रकरण** (सिंघी जैन ग्रन्थमालामां प्रकाशित). तेनी रचना विक्रमनी १२मी सदीना अन्तभागमां थई होय तेवुं संभवे छे. आ ग्रन्थमां, ते काळे बनारस-जनपदमां प्रचलित देश्यभाषानो व्याकरणनी दृष्टिए संस्कृतभाषा साथे केवो सम्बन्ध छे - अने देश्यशब्दोने संस्कार करवाथी संस्कृतनुं शुद्धरूप कई रीते बने छे ते विस्तारपूर्वक वर्णववामां आव्युं छे. तत्कालीन लोकभाषानी लोकरूढ उक्तिओ अने शब्दप्रयोगो द्वारा संस्कृत व्याकरणनुं आधारभूत स्थूलज्ञान सहेलाईथी मेळवी शकाय छे, तेवुं दामोदर पण्डित आ ग्रन्थमां सविस्तर प्रतिपादन करे छे.

आ ग्रन्थ पछी पण आ ज विषयना अने आवी ज शैलीमां रचायेला घणा नाना-मोटा ग्रन्थो अनेक ज्ञानभण्डारोमां प्राप्त थाय छे. एमांथी अद्यावधि उक्तिरत्नाकर, उक्तीयक, औक्तिकपदानि, मुग्धावबोध-औक्तिक (कुलमण्डनसूरि-विरचित) व. पुरातन रचनाओ प्रकाशित थयेल छे.

ते ज क्रममां आ **उगतीय (उक्तीय) शब्दसंस्कार** नामनो ग्रन्थ पण आजे अनुसन्धानना माध्यमथी प्रकाशित थई रह्यो छे. आ ग्रन्थमां प्रारम्भे (नव पत्रो सुधी) शब्दसंग्रह आपवामां आव्यो छे. ते पछी कृदन्तसाधित शब्दोमां कर्मणि भूतकृदन्त, कर्तरि वर्तमानकृदन्त, सम्बन्धक भूतकृदन्त, कर्मणि वर्तमान-कृदन्त, हेत्वर्थ कृदन्त - आ क्रमे संग्रह करवामां आव्यो छे. ते पछी इच्छादर्शक (सन्नन्त) कृदन्तो, आज्ञार्थक क्रियापदो, अकर्मक धातुओ, द्विकर्मक धातुओ, वीस उपसर्गो व. नो संग्रह छे. अन्ते छए कारकोनुं भेद तथा उदाहरण

सहित संक्षेपमां वर्णन छे.

आ रचनामां मुख्यत्वे शब्दसंग्रह ज ध्यानार्ह तथा अभ्यासार्ह छे. कारण के, शब्दसंग्रहमां एवा केटलाये शब्दो छे जे उक्तिरत्नाकर के अन्य रचनाओमां प्राप्त थता नथी. वळी, केटलाय देश्यशब्दो अथवा समसंस्कृत शब्दोना संस्कृत प्रतिरूप आपतां रचनाकारे साथे साथे ते ज शब्दनो बीजो संस्कृत पर्याय शब्द पण मूकेल छे जे अन्य रचनाओमां भाग्ये ज जोवा मळे छे. आ रीते, आ ग्रन्थ केटलाय शब्दोनां मूळ अने कुळ शोधवामां उपयोगी बनी रहे छे, अने मध्यकालीन कृतिओना वाचको-अभ्यासकोने माटे पण आ ग्रन्थ घणो ज उपयोगी अने लघु शब्दकोशनी गरज सारे तेवो छे.

प्रतिपरिचय -

उगतीयशब्दसंस्कारनी आ प्रतिनी झेरोक्ष कोपी मारा पू. गुरुभगवंतना संग्रहमांथी प्राप्त थई छे. मूळ प्रति प्रायः भावनगरनी ग्रन्थभण्डारनी होवानो सम्भव छे. प्रतिनां कुल पत्रो अग्यार (११) छे. प्रत्येक पत्रनुं माप १०.४" x ४.५" छे. प्रत्येक पत्रमां कुल १२ पंक्तिओ छे, छेल्ला पत्रमां ४ पंक्तिओ छे. अक्षरो सुवाच्य-मोटां छे. अशुद्धिओ पार विनानी छे. मोटा भागे शब्दो लखवामां अन्य रचनाओ तथा शब्दकोशोनो सहारो लेवो पड्यो छे, अथवा अनुमानथी शब्दो लख्या छे.

आ प्रतिना लेखक - जे प्रायः रचनाकार पण होय - **ऋषि रूपा** नामे कोई मुनिभगवंत छे अने तेमणे **साधवी सवीरां** नामे साध्वीजीना पठनार्थे आ रचना लखी छे, तेवुं ग्रन्थ प्रान्ते आपेल पुष्पिकाथी जणाय छे. आ लेखक/रचनाकार तथा लेखनकाळ विशे कोई माहिती मळती नथी. लेखनशैली तथा प्रतिनां कद-माप अने शब्दोनी पसंदगी जोतां आ प्रति सत्तरमा सैकामां लखाई होय तेवुं अटकळी शकाय छे.

श्रीउगतीयंशब्दसंस्कार

ए ८० ॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥ अर्हम् ॥

आज – अद्य
कालि्ह – कले(ल्ये)
परम – परेद्यवि
अरीरम – अपरेद्यु
आजूनी – अद्यतनी
काल्हूनी – कल्यतनी
परमूनी – परमदिवसीया
हिवडानी – आधुनकी (आधुनिकी)
साम्प्रतनी
हिवडां – आ(अ)धुना
सांप्रति – साम्प्रतम्
नही तु – नो वा / नो चेत्
लगइ – प्रभृति, आरभ्य
पाखइ – विना, ऋते
मुहिया – मुधा
यम – यथा
तिम – तथा
किम – [क]थं
इणि परि, इम – इत्थं
जईयं – यदा
तहियं – तदा
कहीइ – कदा
एकवार – एकदा
अनेकवार – अनेकदा
सदा – सर्वदा, निरन्तरम्

अन्यम – अन्यथा
एकवार – एककृत्व[:]
बिवार – द्विकृत्व[:]
त्रिणिवार – त्रिणिकृत्य(त्रिकृत्वः)
च्यारिवार – चतु[:]कृत्व[:]
पंचवार – पञ्चकृत्व[:]
सुवार – शतकृत्व[:]
एवं वार शतकृत्वस (?)
(वारस्य संख्यायां कृत्वस्)
एकपरि – एकधा
बिहुं परि – द्विधा, द्वैधा, द्वैधं
त्रिहुं परि – त्रिधा, त्रैधा, त्रैधं
चिहुं परि – चतुर्धा
सइं परि – शतधा
घणी परि – बहुधा
किहां – क्व, कुतः(त्र), कस्मिन् स्थाने
जिहां – यत्र, यस्मिन् स्थाने
तिहां – तत्र, तस्मिन् स्थाने
अनेथ – अन्यत(त्र)
सगलइ – सर्वत्र
तिमइ – तत्कालम्
झटकइ – झट(टि)ति
वहिलुं – शीघ्रम्
उतावलुं – त्वरितम्
जुउ – प्रथुक् (पृथक्)

एकठउ – एकत्र
ताहरुं – त्वदीयम्
माहरुं – मदीयम्
तम्हारुं – युष्मदीयम्, भवदीउं(यम्)
अम्हारुं – अस्मदीयम्
एहनुं – एतदीयम्
किहांनुं – कुत्रत्यम्
इहांनुं – अत्रत्यम्
तिहांनुं – तत्रत्यम्
जां – यावत्
तां – तावत्
येतलुं – यावन्मात्र
तेतलुं – तावन्मात्र
ए[त]लउं – एतावन्मात्र
एतलुं – इयत्
केतलुं – की(कि)यत्
जु – यदि
तु – ततः
जं – यत्
तं – तत्
जइ किमइं – यदि, कथमपि चेत्
इसिउं – इति, ईदृशम्
हा – एवम्
इम ज – एवमेव
हिव – अथ
हिवडां पूठि – अतः परम्
हाथलस (हावलि ?) – प्रत्युत
पूठइं – अनु
पाछइं – पश्चात्
साम्हउं – अभिमुख, सन्मुख
उपराठउं – पराङ्मुख
जमणउ – दक्षिण
डावु – वाम, सव्य
पाधरु – ऋजु, सरल
वांकु – कुट(टि)ल
उपरि – उपरिष्टात्
हेठि – अधः
उपहरुं – ऊर्ध्व
आडउ – तिर्यग्
तरछु – तिरछ (तिरश्चीन ?)
आगलि – अग्रे, पुरस्तात्
आगलु – अग्रेसर
पाछलु – पश्चात्
सरीखुं – सदृक्, समान
सरीखी – सदृशी, सदृष्या (शा)
किसी – कीदृग्, कीदृशी, कीदृशा
अनेसी – अन्यादृशी, अन्यादृग्, अन्यादृशा
तिसी – तादृक्, तादृशी, तादृशा
जिसी – यादृग्, यादृशी, यादृशा
तु-सरीखी – ता(त्वा)दृक्, त्वादृशी, त्वादृशा
मु-सरीखी – मादृक्, मादृशी, मादृशा
अम्ह-सरीखी – अस्मादृक्, अस्मादृशी, अस्मादृशा
तुम्ह-सरीखी – युष्मादृक्, युष्मादृशी, युष्मादृशा
उरहउ – आर्वक् (अर्वाक्)

परहउ – पराक्, परतः
सविहुं-गमा – समन्तात्, विष्वग्, समन्ततः
ऊगुमूगउ – अवाग्(ङ्)मूकः
झलझाखसुं – झलब्भांष्यं (चलद्ध्वाङ्क्षम्)
म(मु)हम(मु)हसीझणउं – मुख-मुखेष(क्षणम्)
उ(ऊ)धांधलूं – ऊर्ध्वधूलकं (उद्धूलिकम्)
सूगामणूं – सूकाजनकम्
षीषइनही – क्षेम-क्षतिर्न हि
आपणुं – आत्मीय, स्वकीयम्
पराउं – परकीय
अनेरानुं – अन्यदीय, अन्यसत्क
देवनुं – देवसत्कि(त्क)
गुरुनुं – गुरुसत्क
जे पुण्य – यदि एति
अजी – अद्याऽपि
तउइ – तथाऽपि
उइहण – ऐषम
पुर – पुरतः, परारि
पढू – प्रतिभू
पढूचुं – प्रतिभाव्यम्
ऊपरीयामणुं – उत्कि(त्क)लिकाकुलम्
कोडि- कौतुक
उल्यउं – अर्वाचीनम्
पइलूं – पराचीनम्
विलखुं – विलक्ष
द्रहद्रहवेला – जइ(य)द्रथवेला
सांझ – सन्ध्या, सायम्
बहवररात्रि – मध्यमरात्रि
नसीथविहाणुं – विभाति प्रत्यूषम्
घडी – घटिका, नाडिका
पुहर – प्रहर, याम
सवार – सवेला
असूरं – असूरम्
चुघडीउं – चतुर्घटिकम्
आधु – अर्ध
पूरु – पूर्ण
अधूरुं – अर्धपूर्ण
दुढउं – सार्ध
अढाई – अर्धतृतीय
अहूठउं – अर्धचतुर्थ
साढापंच – सार्धपञ्च, पञ्चन(पञ्चोन)
बइ – द्वि
तीणि – त्रि
च्यारि – चत्वारि
पंच – पंचन्
छ – षट्
सात – सप्तन्
आठ – अष्टन्
नव – नवन्
दस – दशन्
एकादस – एकादशन्

[द्वादस] – द्वादशन्, त्रयोदशन्,
↓ चतुर्दशन्, पञ्चदशन्,
षोडशन्, सप्तदशन्
[अठारस] अष्टादशन्
एगुणीस – एकोनविंशति
वीस – विंशति
एगुणत्रीस – एकोनत्रिंशत्
त्रीस – त्रिंशत्
एगुणचाली – एकोनचत्वारिंशत्
च्यालीस – चत्वारिंशत्
पंचास – पञ्चाशत्
साठि – षष्ठि
सत्तरि – सप्ततिः
असी – अशीतिः
नेऊ – नवतिः
सु – शति (शत)
बीजु – द्वितीय
त्रीजु – तृतीय
चुथु – चतुर्थ
पाचमु – पञ्चम
छठउ – षष्ट
सातमु – सप्तम
आठमु – अष्टम
नवमु – नवम
दशमु – दशम
इग्यारमु – एकादशम इत्यादि
उरइ-परइ – इतस्ततः
भावइतिहां (?) – यतस्ततः

किहांनु – कुतः, कस्मात्
कांइ – किम्
वली – पुनः
पणि – परम्
मुडइं मुडइं – मन्दं मन्दम्,
शनी शनी (शनैः शनैः)
गाढइं – गाढम्
लांबु – प्रलम्ब, दीर्घ
टुंकु – तुच्छ, ह्रस्व
मोटउ – महान्
जाडउ – स्थूल, उपचित, प्रत्यन(ल?)
दुबलु – दुर्बल, कृश
सोभागीउ – सौभाग्यवान्
रलियामणुं – रतिजनकम्
उदेगामणुं – उद्वेगजनकम्
अबाडूउ – प्रतिकूल
सवाडूउ – सानुकूल
डाहउ – दक्ष
भोलु – मुग्ध
ऊचु – ऊचीस्थर (उच्चैस्तरम्)
नीचु – नीचीस्थर (नीचैस्तरम्)
अधिकु – अधिक
उछउ – हीन
अरत-परत-बापसदृश – आकृत्या
प्रकृत्या [पि]तृसदृश
अग्रेवाण – अग्रानीक
पछेवाण – पश्चा[द]नीक
चुकीवटु – चतुःकपपट(चतुष्कपट्ट)

उरस – अपघर्ष
रसोई – रसवती
सालणुं – साक(शालनक)
कर्बंउं (करंबउ ?)–कर्भक (करम्बक)
सली – शलाका
दोरु – दर्वरक
खीलु – कीलक
उरु – अपवर्क (अर्वाक् ?)
रसोडीउं – महानस
पछोकडउ – पश्चादु(दो)कस्
आंगणुं – अंगण
बार – द्वार
पावडी – सोपान
चुक – चतुष्क
पटसाल – पटशाला
थाभु – स्तम्भ
कुभी – कुम्भिका
भारुट – भारपट्ट
खूणुं – कू(को)णक
ऊंबर – उदम्बर देहली
भउइरुं – भूमिगृह
नीसरणी – नि[:]श्रेणिका
पाटी – पाटिका
पोथी – पुस्तिका
टीपणुं – टिप्पनक
चुगठि – चतु[:]काष्टिका
वींटणुं – वेष्टनक
पूठीदनुं(पूठीअउं?) – पृष्ठिपत्रम्
पानुं – पत्रम्
काणुं – छिद्रम्
माहि – मध्य, अन्तर
बीह – भीति, भय
किमाड – कपाट
छोह – सुधा
वेगलुं – दूरतर
ढूकडउ – आसन(न्न), समीपस्थ
भीतर – अभ्यन्तर
बाहिरलुं – बाहय्या (बाह्य ?)
अंगत – अङ्गगत
वाट – वर्तमाना
सेरी – रथ्या
फलहउं – परिग्रह
आगली – अर्गला
कुंची – कुञ्चिका
कठासनं – काष्ठासनम्
उढणउं – आच्छादनम्
वासइं – उत्तरीय
पहिरणउं – प्रधानवस्त्रम्
पास्थ(थ)रणं – प्रस्तरणम्
आडण – अङ्गमण्डण(न)
मूलिउं – मूलवेष्टन
पछेडी – पटी
साडी – शाटिका
मउड – मुग(कु)ट
राखडी – रक्षा
टीलुं – तिलक, पुहि(पुण्ड्र ?)
काठलुं – ग्रीवक
बहिरखु – बाहुरक्ष

केऊर – [केयूर]
मूदडी – मुद्रिका
कडिदोरु – कटिदर्व(वर)क
काडलुं – कटकम्
कांकण – कङ्कण, वलय
नेऊर – नूपुर
खासडउं – उपानह
पग – पद, अंह्रि
अंगूठु – अङ्गुष्ट
आंगुली – अङ्गुली
लीह – रेखा
गोडउ – जानु
जंघा – ऊरु
बयसका(?) – उ(अ)पान, गुदा
फूहडउं – पुरीष
मूत्र – मौत्र, प्रस्राव
कडि – कटि, श्रे(श्रो)णी
डूटि – नाभि
पेटि – उदर, जठर
पूठि – पृष्ठ
हईउं – हृदय, वक्षस्
थण – स्तन, कुच
खंधु – स्कन्ध, अंस
गाबडि – ग्रीवा
गलुं – कण्ठ
नख – करज
हडबटी – चिबुक
होठ – ओष्ट, रदच्छद
कुंच – कूर्च, श्मश्रु
मुख – वदन, आस्य
दात – दशन
[जीभ] – जिह्वा, रसना, रसज्ञा
तालुं – ताल, काकुद
[नाक] – नासिका, नासा
गाल– गल्ल, कपोल
आंखि – अक्षि, नेत्र, लोचन
कान – कर्ण
निलाडि – ललाट
माथुं – मस्तक, शीर्ष
केस – कुंतल
रूं – रोमन्
हाथ – हस्त, कर
बाहु – भुजा
चामडी – त्वचा
देह – विग्रह, तनु
तांगणी – तनुगमनिका
रइवाडी – राजपाटिका
घोडु – हय, अश्व, तुरंगम
हाथी – गज
बलद – वृषभ, धौरेय
रथ – स(स्य)न्दन, आस्य(श्व)
गाडउं – शकट, अनस्
वाहण – गन्त्री
वहिला – वैत्रवेत्री (वीतवेत्री)
पायक – पत्ति, पदाति
असवार – अश्ववार
पूंतार – आधोरण
सागडी – शाकटिका यन्त्रसार्थ

रामति – क्रीडा
[बकोर] – बर्कर
गोई गोसली – गोप्यशलाका
दडउ – कन्दुक
पासु – अक्ष, देवकन(देवन)
जु – यतः
हीडोलु – दोलन
झीलणुं – जलकेलि
वटवालणुं – वर्त्मपात्रं(पालनम्)
बहेडउं – द्विघडं(घटकम्)
घरटउ – घरट्ट
अरहिट – अरघट्ट
कूउ – [कूपः]
वावि – वापी
खडोखली – दीर्घिका
तलाव – तटाक, सरस्
नइ – नदी, नम्निका (निम्नगा)
समद्र – अम्भोधि
द्र[ह] – ह्रदः
तीर – तट
बूसट – चपेटा
चुहडी – चंचुप(पु)टिका
कावडि(जि) – कायमादनी (कायाटनी)
गरढउ – गतार्धवयम्
वछीआइत – वस्तुवंत(वित्त)
उ(ऊ)सलसीधुं – उश्र(उल्लसित)–सन्धिकम्
वेगडउ – विकटशृङ्ग
लिपसणुं – लपसावनं (लिप्स्यायनम्)
पटंतरुं – प्रत्यन्तर
डोकरु – डोलत्कर
छीडणि – छिद्राटनी
छेकडि – छिद्रकरी
सीराम[णुं] – शीताशन
सुडि – संवृति(तपटी)
सीरख – शीत[र]क्षा
तलाई – तूलिका
उ(ऊ)सीसुं – उपशीर्ष
सेलावटउं – शिलाव(प)ट
खाडाइतुं – खंगाइतूं (खड्गवित्त)
भथाइतुं – भस्त्रवित्त
बगाई – जंभाईका (जृम्भिका)
गूहली – गोमयफलिका (गोमुखा)
कोसीधुं(टुं) – कोषसमृद्धि(द्ध?)
जमाई – यामत्रय (जामातृ?)
भाई – भ्रातृ, बन्धु
पिता – पितृ, जनक
माता – मातृ, जननी
पुत्र – तनय, सुत
पुत्री – तनया, सुता
फुई – पितृष्वसा
मासी – मातृष्वसा
पीतरुं – पितृव्य
माउलुं – मातुल
भाणेज – भाज्ञे(गिने)यः
भत्रीजु – भ्रातृव्य

जाईया – पुत्रवधू, स्नुषा
सासू – सुश्रय (श्वधू)
ससरु – श्वशुर
माय-बाप – मातरपितरौ
सगा – स्वजन
मित्र – वयस्य
फिरक – फर(स्फुरत्)चक्रिका
प(पा)टूआली – पादप्रहारवती
खाईकण – खादनक्षत्य(खादनपरः)
उ(ऊ)घडदूघडु– उद्घट-दुर्घट
बिवणुं – द्विगुणम्
त्रिगुणुं – त्रिगुणम्
चुगणुं – चतुर्गुणम्
कादमालुं – कर्दमाकुल
बापडउ – वराक
वहुरउं – वि(व्य)वहृत
पोठीउ – पृष्ठवाह
अरणइं – अरति
सोहिलुं – सुखावहम्
दोहिलुं – दुःखावहम्
सूआलुं – सुकुमाल, मृदु
खरखरुं – कठिन, कठोर
घाइसुं – सहसा
कबड(कडब) – कडा(णा)बा
बलही – बलाहिका
आहार-जाहार – आगम-निर्गम, एहिरे--याहिरा
महासाहणी – महासाधका
लवार – वाचाल, वावदूक
ऊलषु – उदकोल्लञ्चन
पलवटि– पलवर्तिपटी(परिवलितपटी)
दोटी – द्विपटी
कोटीलु – कुट्टनक
निद्रालूउ – निद्रालक्ष
माडही – बलात्कारेण[ण], हठात्
रूडउ – रुचिर, रम्य
भलु – भव्य, सुन्दर
भाणुं – भाजन, स्थाल
कचोलुं – चक्षु(ष)क
पीगाणुं – पीगानन(पिङ्गाणम्?)
घडउ – घट, कुम्भ
गढउं – उदक, गूढ (?)
करवु(उ) – कर्क (करक)
गागरि – गर्गरी
बेलु – बिवद्रा(?)
कलसु – कलश
माटी – मृत्तिका, मृद्
सोनुं – सुवर्ण, कनक, हेम[न्]
रूपुं – रजत, रूप्य
त्राबूं – ताम्र
सीसुं – सीसक, वङ्ग
तरूउं – त्रपु, नाग
कासुं – कांस्य
लोहडउं – लोह, अयस्
आगर – आकर
खाणि – खानि

लूण – लवण
खार – क्षार
संचल – सौवर्चल
सीधव – सी(सै)न्धव
वानी – वर्णिका
खडी – खटिका
हीगलो – हिंगुल
हरीयाल – हरिताल
मूस – मूषा
साडसु – सन्दंशक
भाथडी – भस्त्रा, यवा
धमणि – धमनिका
काकरु – कर्कर
धूलि – रजस्
वेलू – वालि(लु)का
भूइं – भूमि, भू, धात्री
पर्वत – नग, शिखर, भूधर
टूंक – शृङ्ग, शिखर
कडण – कटक
खेत्र – क्षेत्र
वाडि – वर्ति(वृति ?)
क्यारू – केदार
ईट – इष्टका
ईटाल – लोष्टक
इहटवाह – इष्टकापाक
पाखाण – ग्रावाण, दृषद्
राई – राजका (राजिका)
छाणुं – छा(छ)गण, गोमय
कादम – कर्दम, पङ्क, जम्बाल
स्थाली – उषा (?)
बाधुं – ब(बु)ध्न
वाहडी – आयघटी
ढाकणी – स्थगनिका
घडाकमंची – बलाद्विष्टाकारकः
आरती – आरात्रिका
वसइ – सर्वतोऽवसरः, सभा
परखद – समया(सभा)
गुख – गवाक्ष
पोलि – प्रतोली
सिंहधार – सिंहद्वारम्
बलाणुं – बलानन
आखामंडप – अक्षमण्डपः
गंभारुं – गर्भगृह
देउली – देवकुलिका
भमती – भ्रमावर्तिका
धज – ध्वज, पताका
धलुहर – धवलगृह
घर – सद्म, ओकस्
राजहर – राजगृह
सुणहर – शून्यगृह
पर्व(परव) – प्रपा
चाचर – चत्वर
गढ – दुर्ग, प्राकार
कोसीस – कपिशीर्षक
खाई – परिखा
वाडउ – वाटक

पाडउ – पाटक
जूवटउं – द्यूतावर्त
भंडार – भाण्डागार
कोठार – कोष्ठागार
घोडाहडि – हयशाला, मन्दुरा
हस्त(हस्ति)शाला
चुतरुं, चुरी – चतुरिका
चतुकाशाला – चतुःशालम्
हाट – हट्ट, आपण
पौषधशाला – पौषधागार
करणवारीउं – करणशाला
उवट्ट – उत्पथ
मागी – अनुमार्ग
नगर – पुर, पत्तन
नगरी – पुरी
देश – विषय, मण्डल, राष्ट्र
पालि – पल्लि, पछी (?)
रान – अरण्य, अटवी
थल – स्थल
उपरवाडउं – उत्पथद्वार
खाड – गर्ता
मसाण – स्मशान
चुवटु – चतुघस्य(चतुष्पथ?)
पाज – पद्या
मालु – मालक
पाणी – पानीय, वारि, अम्भस्
हीम – प्रलीयां (?)
करा – करक, घनोपल
बर[फ] –
अवसा, धूअरि – मिहिका
बिंद – विपृष्, जललव
वाहउ – बाहुप्रवाह
नीक – सारणि
कलोल – ऊर्मि, तरङ्गा
लहरि – लहिरी
सेवाल – पनग
कमल – अम्भोज, सरोज, पद्मिनी
तुंतु – बिस
मिघबालाह (?) – जीमूत, मेघमाला,
कादम्बनी
वृष्टि – वर्षण
आकास – व्योमन्, अन्तरिक्ष
दिशि – दिग्, ककुभ
पूर्व – प्राची
दक्षण – आराची (अवाची)
पछिम – प्रतीची
उरत – उदीची, कौबेरी
आग्नेयी
नैर्ऋती
वायवी
ऐशानी
वाउ – पवन
वीजणु – तालवृन्त
आ[ग] – अग्नि, वह्नि, कृशानु
धूं (?) – धूमध्वज
बाफ – बाष्प

फीण – फेन
शज – शषा (?)
झाल – ज्वाला
राख – रक्षा
इंधण – [इन्धन], समिध
मसि – मषी, मलिनाम्बु
काजल – कज्जल, अंजन
अधूण – अर्घ्य
द्रिण (रिख) – वृक्ष, तरु

इम आंबु – आम्र, सहकार
लींब – निम्ब, पिचुमन्द
आबिली – चिञ्चा
पीपल – पिप्पल, अश्वत्थ
वड – वट, न्यग्रोध
कइर – करीर
खेजड – शमी
बाउल – बब्बूल
रायण – राजादनी, प्रियाल
वणखडउ – वनवृष्य
थोहरि – स्नुही, महातरु
कुंआरि – कुमारी
गलो – गडूची
बीलि – बिल्व
बोलि(रि?) – बदरी
केलि – कदली, रम्भा
जाइ – जाती
सेवतरी – शतपत्रिका
कणयर – कणवीर

वे(वो)ल, वे(व)उल – बकुल
वेउल – विचकिल
चापुं – चम्पक
ताड – ताल
पाडल – पाटल
वांस – वंश
काठ – काष्ठ
खइर – खदिर
पीपलि – प्लक्ष
आक – अर्क
धत्तूरउ – धत्तूरक
यवासु – यवाशक
द्रो – दूर्वा
पमाड – प्रपुन्नाट
सेलडी – अक्ष (इक्षु)
ज्वार – जुगन्धरी
सालि – शालि
चोख – तन्दुल
जव – यव
गोहू – गोधूम
डमंडु (उडद?)– माष
मग – मुद्ग
चिणा – चि(च)णक
तूअरि – तुबरी
कुलथ – कुलत्थ
काग – कङ्गु, कोद्रव
चुला – चपलक
चुठ(कोठ?) – कपित्थ

चीभडउं – चिर्भटक
कोठीबडां – कोष्ठभेदकः
सूखडी – सुखभक्षिका
धाणी – धान्या
पुहक – पृथुक
बाकुल – बकुल
वडां – वटक
मांडा – मण्डक
पूडा – पपसो (पूपक)
कुलीस – कुलिका
सूआली – सुखादनी
खोजां – खाद्य
लाडूउ – मोदक
दहीथरां – दधिस्थराः
वडी – वटिका
पापड – पर्पट
बालहुलि – वलफलिका
घी – घृत, आज्य
दूध – दुग्ध, पयस्
माखण – भ्रक्षण, नवनीत
भात – भक्त
धान – धान्य
कूर – अन्धस्य(?), ओदन
दालि – सूप
खीच – क्षिप्र
खीचडी – क्षिप्रचटिका
गोली – गुटिका
कणक – कणिका
समता (?)
आखे – अक्षत
सातू – सक्तु
गुल – गुड
साकर – शर्करा, सितोपला
खांड – खण्ड
मधु – धूलि(?)
दही – दधि
क्षीर – पयस्, परमान्न
घोल – कालशेय
छासि – तक्र
चलू – गण्डूष
सीधू – आसव
तंबोल – ताम्बूल
फोफल – पूग
वेलि – वल्ली
ड(उ?)रुंगुछ – गुला (?)
रायण – राजादन
केलां – कदलीफल
नालीयर – नालिकेर
बीजोरुं – बीजपूरक, मातुलिङ्ग
द्राख – द्राक्षा, मृद्वीका
खारिक – खाद्यारिका
टोपरुं – टोप्पपर
खजूर – खर्जूर
पीलू – पिल (पीलु)
सरसवेल – सर्षपतैल
अलसेल (अलसिवेल) – अतसीतैल
काहरउ (काढउ) – काथ
चूनु – चूर्ण

चंदूउ – चन्द्रोद्योत, उल्लोच
परीच – यवनिका, तिरस्करिणी
तंगोटी – तंगपटी
गूडर (?) – गुप्तापर्वक (?)
साथरा – संस्तर
सेजि – शय्या
मांचु – मञ्चक, पर्यङ्क
खाट – खट्वा
आरीसुं – आत्मदृश (आदर्श), दर्पण
चूडीउ – भद्रासन
आसण – आसन, विष्टर
पेढी – पीठका
माची – मञ्चिका, आसन्दी
अलतउ – अलतक, यावक
दीवु – दीप; गृहमणि
दीवटि – दिसा (दीपवर्तिका ?)
चीनट – स्नेह
काकसुं – कङ्कतिक
काकसी – कङ्कतिका
वेणी – वेणिका, विरी (?)
अंबोडउ – धम्मिल्ल
सिइंथउ – सीमन्थ(न्त)
पली – पलिता
चोटली – काकपक्ष
नूनसतुख – नखिका
आदूं – आर्द्रक, शृङ्गबेर
सूरण – अर्शोघ्न
वइगण – वृन्ताक
गाजर – गृञ्जन
तुंबडउ – अलाबु
हरडइ – हरीतकी, अभया
सूठि – नागर
पींपलि – पिप्पली, कृष्णा (?)
मिरी – मिरच
राई – राजिका, आसुरी
आछण – आनलि
धोयण – धावन
हलदर – हरिद्रा
चाकानी – पीता
खाटूं – अम्ल
खारुं – क्षार
गलिउं – गविल
मीठुं – मिष्ट, मधुर
तीखु – तिक्त
कडूउं – कटुक
कसायलुं – कषाय
वाटलुं – वर्तुल, वृत्त
चुरसुं – चतुरस्र
सांकडउं – सङ्कीर्ण
मोकलुं – मोत्कल
पटल्हइ (पहुलउ?) – पृथुल, विशाल
आकरुं – उत्कट
नीचाऊंचुं – निम्नोन्नत
नीलफूलि – पनक
साख – शङ्ख
कुडउ – कपर्दी
ईयण – अ(इ)लिका
गाडर – गड्डरी

पूरुं – पूतरक
कीडी – कीटिका, पिपीलिका
माकिउं – मत्कोटक
जू – यूका
माकण – मत्कुण
घीमेल – धृतपिपीलिका
कुंथू – कुन्थ
माखी – मक्षिका
डास – दंश
मसा – मशक
कोलीउ – कौलिक
भमरु – भ्रमर, षट्पद
वीछी – वृश्चिक
साप – भुजङ्गम
गोह – गोधा
गिहरोली – गृहगोधा
काकीडउ – कृकलास
नुल – नकुल
उंदर– मूषक
डेडक – मण्डूक
श्वान – श्वन्
बिलाडी – मार्जार
छाली– अजा
बोकडु – छाग
गाय – गो, धेनु
भइस – महिषी
उंट – उष्ट्र
वाघ – व्याघ्र
चीतउ – चित्रक, द्विपिन्
सीह – सिंह, मृगारि
माछउ – मत्स्य
[करहउ] – करभ
साड – षण्ड
गदर्भ – रासभ
सूअर – शूकर
ससु – शशक
हरण – मृग
सीयाल – शृगाल
काछबु – कूर्म
सेहलिउ – जाहक, गात्रसङ्कोची
चिडउ – चाटकैर
काग – वायस
बग – बक
समली – शकुनिका
भरव – भैरव
देवि – दुर्गा
चास – चाष
पारेवुं – कपोत, पारापत
सूअडउ – शुक
साहली – सारिका
कूकडउ – कुक्कुट
मोर – मयूर, कलापिन्
तीतरि – तिनरा (तित्तिरः)
हंस – मला (मराल)
गरुड – वैनतेय
पंखी – पक्षी, विहङ्ग
पाख – पक्षता
चाचा – चञ्चु

कोइल – कोकिल
ढोर – पशु, तिर्यग्
नरग – नरक, श्वभ्र
मनुक्ष – मानव
बालक – शिशु, शाव
बालपण – शैशव
बाल
तरुण
युवान
वडउ – वृद्ध
खिचर – विहङ्गम
वडपण – वार्धक
सहीयर – सहृदय
बोलहार – वाक्मान् (वाग्मी ?)
गूगु – मूक
बहिरु – बधिर
दातार – दाता, दानशूर
कृपण – मितम्पच
सुजाण – सुज्ञान
अजाण – अज्ञान
डहेउं – विदुर
वांदणहारु – वन्दिर
कहिणारु – आशुंसु
रूडा बोलु – प्रियंवद
गहिलु – ग्रथिल
आपवसू – स्वतन्त्र, स्वाधीन
परतंत्र – पराधीन
आपछंदउ – आत्मच्छन्द
महर्धिक – लक्ष्मण
दालद्री – दुर्विध
अणाथीउ – अकिञ्चन
धणी – धनिक, प्रभु
दास – भोजक्ष(भुजिष्य ?)
कमारु – कर्मकर
वहीतरु – भारवाहि(ह)क, भारवैवध
सुहड – सुभट
कायर – कातर
बीहण – भीरु
विगृह – व्याकुल, विहस्त
दयालू – दयालू, कृपालु
सूग – शूक
मारणहार – घातक
मारविउं – व्यापादन
धूर्त – शठ
क्रूर – नृशंस
मायावीउ – व्यंसक
मिस – व्याजात्
चाडउ – कर्णेजप
चोर – चौर, पाटच्चर
आलसू – तुन्दपरिमृज
उंजमालु – उद्यमवंत(वान्)
दान – वितरण
मागणहारुं – मार्गण, याचक
भीखारी – भिक्षाचर
वणीमग – वनीपक
मागवुं – प्रार्थना
हुणहार – भविष्य
लजालू – अपत्रस्थ(त्रप?)

रीसाल – ईर्ष्यालु
भूखु – बुभुक्षु
भूख – क्षुधा
त्रिसु – पिपासु
त्रिस – पिपासा
खाणहार – घस्मर
पेटहडी – कुक्षिम्भर
सर्वभखी – सर्वान्नीन
लोभीउ – लिप्सु
नीलज – निर्लज्ज
अहंकारी – अहंहिउ(अहंयु)
मातु – मत्त
मोटपेठउ – तुन्दिल
टालीउ – खल्वाट
कुबडउ – कुब्ज
छीमणु, वामणुं – वामन
खोडउ – खञ्ज
काणु – काण, एकदृक्, कानतन(?)
दांतलु – दातार(दन्तुर ?)
अंधलु – अन्ध, गताक्ष
मादउ – मन्द, ग्लान
रोग – व्याधि
छीक – क्षुत
खास – कास
खस – कच्छू
खाजि – कण्डू
पोडा – पिदग्(पिटक ?)
कोढ – कुष्ट
हेडकी – हिक्का
सोजा – शोफ
हरसा – हर्षा(अर्शः ?)
छादि – छर्दि
वैद्य – चिकित्सक
उषध – भेषज
पडीग्यु – प्रतिकथक(?)
निरालुउं – निरालग
जोसी – संवत्सरक
लेहउ – लेखक
जूआरी – द्यूतकार
तलार – आरक्षक
नावी – नापित
सोनार – स्वर्णकार
छीपु – रजक
घाची – चात्रिक(?)
लोहार – लोहकार
मइलु – मलिन
ढेढ – अन्त्यज
भील – पुलिन्द
सूत्रहार – सूत्रधार
वणकार – कुविन्द
बाह्मण – वाडव, द्विज, विप्र
क्षत्री – क्षत्रिय
वाणीउ – वणिक्, वणिज,
[गांधी] – गन्धिक
भंडारी – भाण्डागारिक
कोठारी – कोष्ठागारिक
महतु – अमात्य
पुरोहित – पुरोधस्

राजा – राजन्, भूपाल, पार्थिव
लोक – प्रजाजन
वटेवाउ – अध्वनीन
सइबलु – पाथेय
पालु – पादचारण
प्राहूणुं – प्राधूर्णक
गामड – ग्राम्य
नगरीनुं – नागर
हासु – हास्य
रीस – रोष
ऊजम – उद्यम
[] – भयभीत
बीहामणुं – भयङ्कर
परसेवु – प्रस्वेद
आसौ – अश्रु
लाज – व्रीडा
निद्रा – प्रमीला
आलस – तन्द्रा
दयावणुं – दीन
वइराग – वैराग्य
वात – वार्ता
नाम – नामन्, अभिधान
तेडउं – आत्मा(आका)रण
सम – शपथ
ऊतर – उत्तर
पूछ – पृच्छ, पृच्छा
असोई – अपश्रुति
साचुं – सत्य, तथ्यम्
कूडउं – कूट, अलीकम्
पडवडउं – स्फुट-प्रकट
नीठर – निष्ठुर
लूखुं – रूक्ष
गालि – आक्रोश
आसिस – आशिका(ष्)
उलंभु – उपालम्भ
रोईवुं – रुदनम्
संदेसु – वाचिक
आण – आज्ञा
गीत – गेय
नाच – नृत्य, लाश(स्य)
वाजां – वार्जित्र(वादित्र)
तूर – तूर्य
मादल – मृदङ्ग
भेर – भेरी
ताल – ताला
जालर – झल्लरी
स्वर्ग – सुरालय
देव – निर्जर
सूर्य – सहस्रांशु
तावडउं – आतप
झाझूआ – मृगजल
पारीयास – परिवेष
चंद्र – विधु
अहिनाण – अभिज्ञान
चाद्रणुं – चन्द्रातप
अज्वाली रात्रि – ज्योत्स्ना रात्रि
पडवे – प्रति[पत्]
बीज – द्वितीया

चुथी – चतुर्थी
अमावास – अमावास्या
पूनम – पूर्णिमा
पाखी – पक्षिका
चुमासं – चतुर्मासकम्
पजूसण – पर्युषणापर्वन्
अठाही – अष्टाहिका
पाखषमण – पक्षा[न]शन (पक्षक्षपन?)
मासक्षमण – मासक्षम(प)न
उपवास – अ(उ?)पोषित, चतुर्थ
आबिल – आचाम्ल
निवी – निर्विकृतिक
एकासणुं – एकभक्त
परमढ – पुरिमार्ध
पोरिसि – पौरुषी
ब्यासणुं – द्विभक्त
नुकारसी – नमस्कारसहितम्
पचखाण – प्रत्याख्यान
पडिकमणुं – प्रतिक्रमण
पडिलेह[ण] – प्रतिलेखन
काउसग – कायोत्सर्ग
खामणुं – क्षामनक
वादणुं – वन्दनकम्
खमासमण – क्षमाश्रमण
आलोयण – आलोचना
सझाय – स्वाध्याय
वषाण – व्याख्यान
चलोटउ – चोलपट्ट
उघु – रजोहरण, धर्मध्वज
महुपती – मुखपोत(ति)का
वदना – वादनिका
नसेज – निषेद्य
पूछणुं – पादप्रोञ्छनक
डंडासणुं – दण्डासनकम्
पूजणी – प्रमार्जनिका
कभली – कपरिका, काम्बली
त्रसा (?)
गोछउ – गोच्छक
पात्रकेसरी – पात्रकेसरिका
पडलुं – पटलक
रयत्राण – रजस्त्राण
तृपणुं – तृपनकम् (तर्पणकम्)
कडहटउं – कटाहटकम्
मसीजणुं – मषीपात्रम्, मषीभाजनम्
लेखण – लेखनी
छुरी – छुरिका
कापणी – कर्तरी
वेहनकं – वेधनकं
नरहिणी – नखहरणी
डाडी – दण्डिका
नउकार – नमस्कार
नुकरवाली – नमस्कारमालिका
अरिहंत – जिन, वीतराग, परमेष्ठिन्
गणधर – गणभृत्
आचार्य – आचार्यमिश्र
उपाध्याय – पाठकमिश्र
माहात्मा – महात्मन्

नृगंथ – अनगार
वणारीस – वाचकमिश्र
पड्यास – पण्डितमिश्र
क्षलक – वग्नेय (विज्ञेय?)
दीक्षा – प्रव्रज्या
मोक्ष – अपवर्ग, सिद्धि
शास्त्र – श्रुत
पूज्य – भगवान्
कलाण – माङ्गल्य, भद्र

॥ इति शब्दसंस्कार ॥१॥ छ ॥

ए ॎ०॥ अर्हं ॥

उक्तः पञ्चधा कर्ता – १. कर्म, २. भावि, ३. कर्मकर्ता, ४. हेतुकर्ता (?) ५. नष्टकर्ता ॥

हुं (हुउं ?) भूतम्, जातम्
पीधुं – पीतम्
सूघुं – आघ्रातम्
धमिउं – ध्यानं (ध्मातम् ?)
रहिउं – स्थितम्
जीतुं – जितम्
खयं – खणम् (क्षतम्)
स्मरिं – स्मृतम्
तिरु – तीर्णम्
धाउं – ध्यातम्
कुरमाणुं – म्लान
उघु – निद्राण
ध्रायउ – ध्रात
लोचु – लोचित
पूजुं – अर्चित, पूजित, महित
वाछिउं – वाञ्छित, इष्ट, अभीष्ट, ईहित
मूछिउं – मूर्च्छित
उपार्जिउं – उपार्जित, अर्जित
छाडउं – त्यक्त
मेल्हिउ – मुक्त
लागु – लग्न, सक्त
गानुं – गर्जित, स्तनित
गोपवउं – गुप्त
लवु – प्रलपित
बोलुं – जल्पित
कहउ – कथित
जपु – जप्त
चुब्यु – चुम्बित
आचम्यउ – आचान्त
चापु – आक्रान्त
माडउं – प्रक्रान्त
संक्रमुं – सङ्क्रान्त
प्रणिमुं – प्रणत
वांद्यउ – वन्दित

नमस्करु – नमस्कृत
ग्यउ – गत
आवुं – आगत
मालुं – मलित
पढिउ – पठित, अधीत
आचरुं – आचीर्ण
बाध्यउ – बद्ध, यन्त्रित, कीलित
फलिउ – फलित
फूलुं – पुष्पित
खलहिउं – संवलित
जीवुं – जीवित, प्राणित
दीठुं – दृष्ट
डसिउं – दष्ट
मोषुं – मोषित
तूठु – तुष्ट
हरखु – हर्षित(हृष्ट)
रिष्ट – तुष्ट, प्रीत
मूसु – मुष्ट
घसिउं – घृष्ट
कसुं – कषित
घ्रसु – ग्रसित
त्रिसु – तृषित
निसु – निस्त(निरस्त ?)
परसुं – स्पृष्ट
अभ्यसउ – अभ्यस्त
वसिउं – उषित
ऊससउ – उच्छ्वसित
हसु – हसित
कीधु – कृत, विहित
दीधु – दत्त
लीधुं – गृहीत, आ[द]त्त
अंगीकरु – अङ्गीकृत
वीध्यु – विद्ध
खाधु – भक्षित
दाधु – दग्ध
बाधु – बन्धन(बद्ध ?)
लाधु – लब्ध
मूउं – मृत
भरुं – भृत, भरित
जरु – जीर्ण
झरु – क्षरित
वासि – [वा]सित
[खाधुं] – भुक्त
आदिरु – आदृत
धरु – धृत
वरु – वृत
आवरुं – आवृत
छावरुं, ढाकु – आच्छादितम्
सरु – सरित(सृत)
प्रसरु – प्रसृत
विस्तरउ – विस्तीर्ण
उधरु(धरु?) – धृत
संहरु – संहृत
उदाहरु – उदाहृत
उपनउ – उत्पन्न
संपनु – सम्पन्न
उसंनुं – श्रान्त
लागु – लग्न

न्हाउ – स्नान(त), मज्जन(मज्जित)
पचु – पच्यत(पक्व ?)
रचु – रचित
संचु – सञ्चित
लीपुं – लिप्त
लोपुं – लुप्त
उहटिउ – निवृत
पाछु वलिउ – पछवीतू वलत(पश्चाद् वलित ?)
पांगुरु – प्रावृत
राखु – रक्षित
दीखु – दीष(क्षि?)त
लाखु – विक्षिप्त
घालु – क्षिप्त
चालु – चलित
बलु – ज्वलित
कलु – कलित
नीकलु – नी(नि?)ष्कलित
नीसरु – निःसृत
गलिउं – गलित
छलु – छलित
ढलु – लुठित
पलु – पलित
सांभलुं – श्रुत, आकर्णित
रुलिउ – रुलित
वलिउ – वलित
कापु – कम्पित
थापुं – स्थापित
व्यापु – व्यापित(व्याप्त)
कापिउं – क्लृप्त
तापुं – तप्त
विगूउ – विगुप्त
सूतु – सुप्त
जागु – जागृत
उठिउं – उष्टितं(उत्थित)
बइठु – उपविष्ट
पइठु – प्रविष्ट
नीठउं – निष्ठित
रहिउ – स्थित
सामहिउ – सज्जीभूत
सनहिउं – सन्नद्ध
संग्रहउं – संगृहीत
सासहिउ – संसोढ
जमुं – [] (?)
रूधउं – रुद्ध
पीसुं – पिष्ट
चोरु – चोरित
चीतवुं – चिंतित
रमउ – क्रीडित
भ्रमुं – भ्रान्त
दमु – दान्त
वमिउ – वान्त
उपसामु – उपसान्त
छेदउं – छिन्न
भेदउं – भिन्न
प्रेरु – प्रेरित
वखाणुं – व्याख्यात
पाउ – पायित

रहावुं - स्थापित
संभारु - स्मृत
कराव्यु - कारित
छंडाव्यु - त्याजित
मेल्हावुं - मोचित
नमाडिउ - नामित
मोकल्यु - प्रहित
पढावु - अध्यापित
देखाडिउ - दर्शित
तूसव्युं - तोषित
वासु - वासित
आप्युं - अर्पित
लेवराव्युं - ग्राहित
ऊठाडिउ - उत्थापित
बइसारिउं - उपवेशित
काढिउ - निष्कासित
जमाडिउ - भोजित
भमाडिउ - भ्रामित
सूआडिउ - शायित
न्हवडाव्युं - स्नापित

होईतु - भवत्
देयत - ददत्
धरतु - दधत्
करतु - विदधत्
जागतउ - जागृत (जाग्रत्)
मइत् (?) - दे(दी?)व्यत्
पोसतु - पोषन् (पुष्णन् ?)
वरतु - वृण्वन्
सक्कउ - शक्नुवन्
पामतु - प्रापन्
रूधतु - रुन्धन्
जोमतु - जंजान (?)
भेदतु - भिन्दान
जमतु - भुञ्जान
मानत - मन्वान
लेयतु - गृह्णन्
लुणतु - लुन्वन्
जाणतु - जानन्
चोरतु - चोरयन्
चिंततउ - चिन्तयन्
परस्मैपदे संवृत् (शतृ?),
आत्मनेपदे आनश्

होई - भूत्वा
पीइ - पीत्वा
रही - स्थित्वा
बोली - उक्त्वा
जोई - गत्वा
देई - दत्त्वा
छाडी - हित्वा, मुक्त्वा
रमी - रन्त्वा
रूधी - रुन्ध्वा
फाडी - भित्त्वा
जमी - भुक्त्वा
नमी - नत्वा
लेई - गृहीत्वा
भाजी - भङ्क्त्वा

जाणी – ज्ञात्वा
चीती – चिन्तयित्वा
चोरी – चोरयित्वा
करी – कृत्वा, विधाय
उठी – उत्थाय
ढाकी – पिधाय
पइसी – प्रविश्य
पामी – प्राप्य
आवी – आगत्य
सांभली – श्रुत्वा, आकर्ण्य
उसरी – उत्सार्य
आदरी – आदृत्य
माडी – प्रारभ्य
मोकली – प्रस्थाप्य
तेडी – आकार्य
वारी – निवार्य
विहरी – विहृत्य
पहिरी – परिधाय
जोई – विलोक्य
आपी – समर्प्य
विमासी – विमृश्य
वखाणी – व्याख्याय
पाछु वली – व्याघुट्य

कीजतो – कीर्य(क्रिय)माण
दीयतुं – दीयमान
पीजतुं – पीयमान
लीजतुं – गृह्यमान
परसीजतुं – परिसिज्यमान
खीजतुं – क्षीयमाण
गायतुं – गीयमान
खायतुं – खाद्यमान
दीसतुं – दृश्यमान
संभारीतु – श्रूयमाण
बोल(ला)तुं – उच्यमान
करावितु – कार्यमान
उठाडीतु – उत्थाप्यमान
रहावतु – स्थाप्यमान
मोकलीतु – प्रेष्यमाण
जमाडीतु – भोज्यमान
आणीतु – आनीयमान
उपाडीतु – उत्पाट्यमान

करिवा – कर्ता (कर्तुम्)
लेवा – ग्रहीतुम्
देवा – दातुम्
पीवा – पातुम्
संभलिवा – श्रोतुम्
जोवा – द्रष्टुम्
जिमवा – भोक्तुम्
बोलवा – वक्तुम्
बइसवा – उपवेष्टुम्
रहिवा – स्थातुम्
जाइवा – गन्तुम्
आणिवा – आनेतुम्
करावित्रा – कारयितुम्

लेवराइवा - ग्राहयितुम्
दवराविवा - दापयितुम्

लेणहार - जिग्रहिषु
करणहार - चिकीर्षु
वरणहार - वुवूर्षु
मरणहार - मुमूर्षु
सम(स्मरण ?)हार - सुस्मूर्षु
चरणहार - जिगी(गमि)षु
ऊ[ठ]णहार - उत्तिष्ठासु
रहणहार - तिष्ठासु
बइसणहार - उपविविक्षु
[प]इसणहार - प्रविविक्षु
जाणणहार - जगमुष(जिगमयिषु?)
आपणहार - अपायसु(अर्पिपिषु ?)
देखणहार - द्रष्टव्य(दिदृक्षु)
सांभलिउणहार - शुश्रूषु
बोलणहार - विवक्षु
पडणहार - पिपतिषु
भणहार - बिभणिषु
वखाणहार - व्याचिख्यासु
चालणहार - चिचलिषु
दइणहार - दित्सु
जाणहार - जिज्ञासु

करि - कुरा(रु)
लइ - गृहाणि(ण)
दिइं - देहि
आणि - आनय
जाणि - जानीहि
वखाणि - व्याख्याहि
बोलि - बिहु(ब्रवीहि)
ऊठि - उत्तिष्ठ
रहि - तिष्ठ
मोकलि - प्रहि[णो]तु
जमिं - भु[न]क्तु
जोइ - पश्य

॥ इति क्रियासङ्क्षेपः ॥

लाजइ, रहइ, हुइ, जागइ, वाधइ, खूटइ, जीवइ, मरइ, सूवि, रमइ, भावइं, शोभइं - एते धातवोऽकर्मकाः ॥

दोहि - दोग्धि
मागइ - याचति(ते)
रूधइ - रुणद्धि
पूछइ - पृच्छति
भीख[इ] - भिक्षते
सीख[व]इ - अनुशास्ति
पमाइ - नयति
छू(चू)टिवि - चिनोति
इत्यादयो द्विकर्मकाः कीरतातश्च (कीर्तिताश्च) ।

प्र-परा-ऽप-समन्वय-निर्दुरभि-व्यधि-सूदति-नि-प्रति-पर्यपयः ।
उप-आङिति विंशतिरेष सखे ! उपसर्गगणः कथितः कविना ॥

लज्जा-सत्ता-स्थिति-जागरणं
वृद्धि-क्षय-भय-जीवित-मरणम् ।
शयन-क्रीडा-रुचि-दीप्त्यर्था
धातव एते कर्मविहीनाः ॥

तथा कर्ता षड्विधः - स्वतन्त्रकर्ता ।१।, हेतुकर्ता ।२।, कर्मकर्ता ।३।, उक्त-कर्ता ।४।, अनुक्तकर्ता ।५।, उपयुज्यमानकर्ता ।६।
तथा[हि] - गुरुः व्याख्यानं करोति, साधुः धर्मं करोति, लूयते केदारः स्वयमेव, उक्तानुक्तौ प्रसिद्धौ, नगरं दृश्यते ॥

त्रिविधं कर्म - प्राप्यं - निर्वर्त्यं - [विकार्यं] च । ग्रामं याति, कटं करोति, काष्ठं दहति ।

करणं द्विधा - दात्रेण लुनाति - बाह्यकरणम् ।
मनसा मेरुं याति - अभ्यन्तरकरणम् ।

सम्प्रदानं त्रिधा - प्रेरकं, अप्रेरकं, अनिराकृतं च ।

अपादानं द्विधा - चलं अचलं च ।
धावतोऽश्वात् पतति । वृक्षात् पर्णं पतितम् ।

अधिकरणं चतुर्धा - व्यापकम्, उपश्लेषकम्, सामीप्यकं, वै[ष]यिकम् ।

शरीरे ज्वरः, कटे आस्ते, नद्यां घोष, शस्तो वधान (शत्रौ अवधानम् ?)

इति उगतीयं शब्दसंस्कार समाप्तः । **ऋषिरूपा**लिखितम् । **साधवी सवीरां**पठनार्थम् ॥

C/o. श्रीविजयनेमिसूरि स्वाध्यायमन्दिर
१२, भगतबाग, शारदामन्दिर पासे,
पालडी, अमदावाद-७